पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार
University of Patanjali, Haridwar

PROGRAMME PROJECT REPORT (PPR)

M.A. दर्शन
M.A. Philosophy

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026–2027 से प्रभावी)

(Effective from Academic Session 2026–2027)

Accredited with Grade A+ by NAAC

पतंजलि विश्वविद्यालय,(हरिद्वार)

PROGRAMME PROJECT REPORT (PPR)

M.A. दर्शन

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026-2027 से प्रभावी)

Contents

1.विश्वविद्यालय परिचय 4

2.विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision) 4

3.विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission) 4

4. कार्यक्रम का परिचय B.A. दर्शनशास्त्र 5

5.कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व 5

6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives) 6

7.कार्यक्रम मिशन (Programme Mission) 6

8.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes) 7

9.विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता 7

10.लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners) 8

11.कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण 8

12.Instructional Design (शिक्षण-अधिगम प्रणाली) 9

13.कार्यक्रम संरचना 10

14.मूल्यांकन प्रणाली 12

15.रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर 13

16.प्रवेश प्रक्रिया 13

17. शुल्क संरचना (Indicative) 15

18.गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली 15

19.शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources) 15

20.अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support) 16

21.प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता 17

22.कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान 17

1.विश्वविद्यालय परिचय

पतंजलि विश्वविद्यालय भारत की अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थाओं में से एक है, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आधुनिक वैज्ञानिक **शिक्षा के समन्वय हेतु समर्पित है। यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड राज्य के पवित्र नगर** हरिद्वार के समीप स्थित है, जहाँ आध्यात्मिकता, संस्कृति एवं शिक्षा का अद्भुत वातावरण विद्यमान है। विश्वविद्यालय का नाम महान योगद्दष्टा महर्षि पतंजलि के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने योगसूत्रों के माध्यम से मानवता को चित्तशुद्धि, आत्मविकास और मोक्ष का मार्ग प्रदान किया।

विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे योग, आयुर्वेद, संस्कृत, दर्शन, वेद, उपनिषद् तथा शास्त्रीय विषयों को आधुनिक पद्धति से विद्यार्थियों तक पहुँचाना है। इसके साथ-साथ विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं व्यावसायिक विषयों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है।

विश्वविद्यालय शिक्षण, शोध, प्रशिक्षण, **चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण के समन्वित दृष्टिकोण पर कार्य करता है।** Open and Distance Learning (ODL) प्रणाली के माध्यम से यह संस्था उन विद्यार्थियों तक शिक्षा पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है जो किसी कारणवश नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते।

2.विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision)

- विश्वबन्धुत्व की भावना के साथ प्राचीन वैदिक ज्ञान एवं नूतन वैज्ञानिक अनुसन्धान के समायोजन से वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना।
- प्राचीन भारतीय संस्कृति सार्वकालिक, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को स्वयं में समाहित किए हुए है, अतः भारतीय संस्कृति व ज्ञान परम्परा को। पुनः प्रतिष्ठा दिलाने एवं भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से स्वस्थ, सुयोग्य व चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना।

3.विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission)

- योग, आयुर्वेद एवं संस्कृत का शिक्षण की मुख्यधारा में प्रतिष्ठापन
- प्राचीन वैदिक ज्ञान का आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण

- विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के सम्मिश्रण से शान्तिपूर्ण जीवनशैली का मार्गदर्शन
- प्राचीन ज्ञान एवं संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन

4. कार्यक्रम का परिचय M.A. दर्शन

M.A. दर्शन दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दार्शनिक परंपराओं, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, अध्यात्म, तुलनात्मक दर्शन एवं आधुनिक जीवन में दर्शन की उपयोगिता का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना है।

भारतीय दर्शन विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध दार्शनिक परंपराओं में से एक है। यह केवल बौद्धिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन जीने की कला, दुःख से मुक्ति, आत्मबोध और सामाजिक संतुलन का मार्ग भी प्रस्तुत करता है।

इस कार्यक्रम में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा, वेदान्त, बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे विविध दर्शन प्रणालियों का अध्ययन कराया जाएगा। विद्यार्थी यह समझ सकेंगे कि भारतीय ऋषियों ने ज्ञान, आत्मा, ईश्वर, जगत, कर्म और मोक्ष जैसे गूढ़ विषयों पर किस प्रकार गहन चिंतन किया।

यह कार्यक्रम आधुनिक विद्यार्थियों को तर्कशीलता, नैतिकता, आत्मानुशासन और नेतृत्व क्षमता प्रदान करने में सहायक होगा।

5.कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि सही विचार, नैतिक जीवन और मानसिक संतुलन भी होना चाहिए। दर्शनशास्त्र इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

भारतीय दर्शन विद्यार्थियों को सिखाता है कि जीवन में समस्याएँ क्यों उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है। यह व्यक्ति को विवेक, धैर्य, संयम और आत्मनिरीक्षण की शिक्षा देता है।

सा विद्या या विमुक्तये

अर्थात् वह विद्या ही वास्तविक है जो मनुष्य को बंधनों से मुक्त करे।

आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में भारतीय दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह मानसिक शांति, मूल्यपरक जीवन और सामाजिक समरसता का मार्ग प्रस्तुत करता है।

6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives)

शिक्षा सभी को सरलता से उपलब्ध हो सके, दूर दराज के गांवों और नगर से कटे हुए क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ शिक्षण कार्य किया जाना आवश्यक हैं। पतंजलि विश्विद्यालय का मुख्य प्रयोजन ODL द्वारा भौगोलिक और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार करना है

इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- PEO1 - दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों की समझ ।
- PEO2 - तर्कशक्ति का विकास ।
- PEO3 - नैतिक, सामाजिक एवं वैश्विक उत्थान में दर्शन का योगदान ।
- PEO4 - वैदिक एवं वैदिकेतर विचारधाराओं के अन्तर का ज्ञान।
- PEO5 - व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्रोत्थान के लिए जिम्मेदारी (Responsibility) एवं स्वामित्व (Ownership) का भाव विकसित करना।
- PEO6 - Philosophy को केवल जानना ही नहीं अपितु जीना।
- PEO7 - वक्तृत्व, नेतृत्व एवं दिव्य Domination का भाव विकसित करना।

7.कार्यक्रम मिशन (Programme Mission)

- • भारतीय दर्शन, वैदिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करना।
- • विद्यार्थियों में तर्कशील चिंतन, समालोचनात्मक दृष्टि एवं दार्शनिक विश्लेषण क्षमता का विकास करना।
- • नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन, चरित्र निर्माण एवं उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करना।
- • शास्त्रीय एवं समकालीन दार्शनिक विचारधाराओं के समन्वित अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
- • शोध, नवाचार एवं अकादमिक उत्कृष्टता के लिए प्रेरक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना।
- • भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं वैश्विक प्रसार में योगदान देना।
- • विद्यार्थियों को समाज, राष्ट्र एवं मानवता के प्रति संवेदनशील, जागरूक एवं नेतृत्वक्षम नागरिक के रूप में विकसित करना।

- • दर्शनशास्त्र के माध्यम से जीवन मूल्यों, मानसिक संतुलन तथा आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करना।
- • मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ODL) प्रणाली के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सभी वर्गों तक सुलभ बनाना।
- • आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) की भावना को प्रोत्साहित करते हुए सतत् ज्ञानार्जन के अवसर उपलब्ध कराना।

8.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes)

इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी निम्न योग्यताएँ प्राप्त करेगा:

- PO1 - दार्शनिक धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन।
- PO2 - तार्किक विश्लेषण.
- PO3 - प्राचीन (Classical) और अर्वाचीन (Modern) दार्शनिकों का परिचय ।
- PO4 - स्वतन्त्र विचारधारा और आलोचनात्मक चिन्तन
- PO5 - समाज, संस्कृति और धर्म का दार्शनिक दृष्टिकोण ।
- **PO6** - व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्र निर्माण के लिए सामर्थ्य एवं योगदान ।

9.विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मिशन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान हेतु समर्पित है, और दर्शनशास्त्र उसका प्रमुख आधार है।

दर्शन का अध्ययन विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उन्हें जीवन के उच्च आदर्शों से भी जोड़ता है। यह कार्यक्रम योग, संस्कृत, वेद एवं भारतीय संस्कृति के अध्ययन को भी समर्थन देता है।

इस प्रकार यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के उस उद्देश्य को पूर्ण करता है जिसमें शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कल्पना की गई है।

10.लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners)

यह कार्यक्रम उन सभी शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी है जो भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन, संस्कृति और मूल्यपरक शिक्षा में रुचि रखते हैं।

विशेष रूप से यह निम्न वर्गों के लिए उपयुक्त है:

- 1B.A. दर्शन / संस्कृत / humanities के विद्यार्थी
- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी
- कार्यरत कर्मचारी
- गृहिणियाँ
- संस्कृत एवं शास्त्र अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थी
- आध्यात्मिक अभिरुचि वाले व्यक्ति
- आजीवन शिक्षार्थी

11.कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण

इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्न दक्षताओं का विकास होगा:

- आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- तार्किक विश्लेषण (Logical Analysis)
- संप्रेषण कौशल (Communication Skills)
- नैतिक निर्णय क्षमता
- लेखन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल
- नेतृत्व, वक्तृत्व एवं अतिसूक्ष्म विषयों के बोध की क्षमता
- आत्मअनुशासन एवं आत्मविश्वास

ये कौशल विद्यार्थियों को व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में सफल बनाएँगे।

12.Instructional Design (शिक्षण-अधिगम प्रणाली)

कार्यक्रम को ODL mode के अनुरूप इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें। अध्ययन सामग्री- विद्यार्थियों को मुद्रित एवं डिजिटल Self Learning Material (SLM) उपलब्ध कराया जाएगा। सामग्री सरल भाषा, उदाहरणों और चित्रों सहित होगी।

ऑनलाइन संसाधन

- Video Lectures
- Live and Recorded Classes
- PPT Notes
- e-Books
- LMS Portal

Academic Support

- Online Doubt Clearing Sessions
- Email Support
- PCP (Personal Contact Programme)
- Faculty Guidance Sessions

इस प्रकार कार्यक्रम स्व-अध्ययन एवं मार्गदर्शित अध्ययन दोनों का संतुलित मॉडल प्रस्तुत करता है।

13.कार्यक्रम संरचना

यह कार्यक्रम दो वर्ष की अवधि का होगा तथा चार सेमेस्टर में विभाजित रहेगा। प्रत्येक सेमेस्टर में मूल विषय, कौशल आधारित विषय सम्मिलित होंगे।

कार्यक्रम क्रेडिट आधारित प्रणाली पर आधारित होगा, जिससे विद्यार्थी व्यवस्थित रूप से अध्ययन कर सकें।

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	*Course Title*	Credit			
				Credits	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-101	सांख्य-योगदर्शन *I*	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-102	न्याय-वैषेषिकदर्शन *I*	5	25	75	100
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-103	वेदान्त-मीमांसादर्शन *I*	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-104	वेदान्त-मीमांसादर्शन *I*	4	25	75	100
5	Inter Disciplinary	MDPHID-105	संस्कृतव्याकरण *I*	4	25	75	100
						Total Credits	22

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-201	सांख्य-योगदर्शन *II*	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-202	न्याय-वैषेषिकदर्शन *II*	5	25	75	100
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-203	वेदान्त-दर्शन *II*	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-204	वैदिकेतर दर्शन *II*	4	25	75	100
5	Inter Disciplinary	MDPHID-205	संस्कृतव्याकरण *II*	2	15	35	50
6	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-206	Research and Publication Ethics	2	15	35	50

Total Credits	**22**

Semester III

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Subject Total
1	*Discipline Specific Major*	*MDPHMJ-301*	*सांख्य-योगदर्शन* III	4	25	75	100
2	*Discipline Specific Major*	*MDPHMJ-302*	*न्याय-वैषेषिकदर्शन* III	4	25	75	100
3	*Discipline Specific Minor*	*MDPHMN-303*	*वैदिक साहित्य*	4	25	75	100
4	*Discipline Specific Minor*	*MDPHMN-304*	*प्रस्थानत्रयी* I	4	25	75	100
5	*Skill Enhancement*	*MDPHSE-305 (1)*	*सस्वरवेदपाठ*	2	15	35	50
	Skill Enhancement	*MDPHSE-305 (2)*	*भारतीयसंगीत-गायन*				
	Skill Enhancement	*MDPHSE-305 ()*	*भारतीयनृत्यपरिचय भरतनाट्यम्*				
6	*Reaserch Related Courses/Activities*	*MDPHRE-306*	*Research Medothology*	4	25	75	100
						Total Credits	**22**

Semester IV

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Total
1	*Discipline Specific Major*	*MDPHMJ-401*	सांख्य-योगदर्शन *IV*	5	25	75	100
2	*Discipline Specific Major*	*MDPHMJ-402*	न्याय-वैषेषिकदर्शन *IV*	5	25	75	100
3	*Discipline Specific Minor*	*MDPHMN-403*	उपनिषद् बोध	4	25	75	100
4	*Discipline Specific Minor*	*MDPHMN-404*	प्रस्थानत्रयी *II*	4	25	75	100
5	*Reaserch Related Courses/Activities*	*MDPHRE-405*	*Project/Dissertation*	4	25	75	100
						Total Credits	**22**

14.मूल्यांकन प्रणाली

विद्यार्थियों का मूल्यांकन निरंतर एवं अंतिम परीक्षा दोनों के आधार पर किया जाएगा।

Continuous Assessment – 25%

- Assignments
- Internal Test
- Quiz
- Seminar / Presentation

Semester End Examination – 75%

सेमेस्टर के अंत में लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे।

Section	Questions	Marks
A	3/5 Long Answer	45
B	6/7 Short Answer	30
Total		75

इस प्रणाली से विद्यार्थियों की **सतत प्रगति एवं विषय ज्ञान दोनों का मूल्यांकन संभव होगा।**

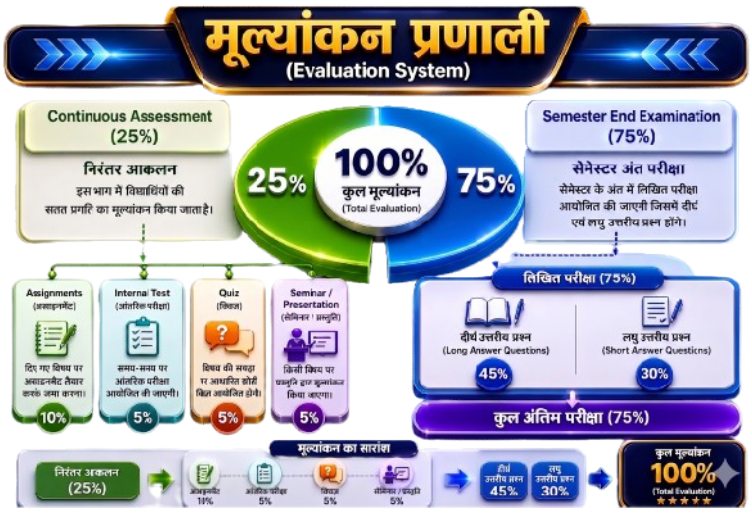

15.रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर

B.A. दर्शनशास्त्र कार्यक्रम के पश्चात विद्यार्थी निम्न क्षेत्रों में अवसर प्राप्त कर सकते हैं:

- PhD in Philosophy
- UGC NET / JRF
- Teaching (Assistant Professor)
- Research Institutes
- Civil Services
- Spiritual Counselling
- Content Writin

16.प्रवेश प्रक्रिया

एम.ए दर्शनशास्त्र कार्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं छात्र-केंद्रित बनाया गया है, ताकि विभिन्न पृष्ठभूमि के अभ्यर्थी सहजता से नामांकन कर सकें। यह प्रक्रिया मुख्यतः चार चरणों—ऑनलाइन आवेदन (Online Form), दस्तावेज़ सत्यापन (Document Verification), शुल्क भुगतान (Fee Payment) तथा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation)—में पूर्ण की जाती है।

- प्रथम चरण में अभ्यर्थी को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र (Online Form) को सावधानीपूर्वक भरना होता है। इस प्रपत्र में व्यक्तिगत विवरण (जैसे नाम, जन्मतिथि, संपर्क जानकारी), शैक्षणिक योग्यता, श्रेणी (यदि लागू हो) तथा वांछित कार्यक्रम का चयन करना होता है। अभ्यर्थी को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी प्रविष्टियाँ सही एवं प्रमाणिक हों, क्योंकि आगे की प्रक्रिया इन्हीं सूचनाओं के आधार पर संचालित होती है। साथ ही, आवश्यक दस्तावेज़ों की स्कैन प्रति भी अपलोड करनी होती है।
- द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़ों का सत्यापन (Document Verification) किया जाता है। इसमें अभ्यर्थी की शैक्षणिक योग्यता (जैसे 12वीं की अंकतालिका), पहचान प्रमाण, जन्मतिथि प्रमाण तथा अन्य आवश्यक प्रमाण-पत्रों की जांच की जाती है। यह सत्यापन प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से अथवा आवश्यकता अनुसार ऑफलाइन भी की जा सकती है। सत्यापन का उद्देश्य अभ्यर्थी द्वारा

प्रस्तुत जानकारी की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना होता है, जिससे प्रवेश प्रक्रिया निष्पक्ष एवं विश्वसनीय बनी रहे।

- तृतीय चरण में अभ्यर्थी को निर्धारित शुल्क (Fee Payment) का भुगतान करना होता है। विश्वविद्यालय विभिन्न डिजिटल माध्यमों—जैसे नेट बैंकिंग, डेबिट/क्रेडिट कार्ड या अन्य ऑनलाइन भुगतान प्रणालियों—के माध्यम से शुल्क जमा करने की सुविधा प्रदान करता है। शुल्क का भुगतान निर्धारित समय-सीमा के भीतर करना अनिवार्य होता है, अन्यथा आवेदन निरस्त हो सकता है। भुगतान के पश्चात अभ्यर्थी को रसीद (Payment Receipt) प्राप्त होती है, जिसे भविष्य के संदर्भ हेतु सुरक्षित रखना आवश्यक है।
- चतुर्थ एवं अंतिम चरण में विश्वविद्यालय द्वारा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation) की जाती है। सभी औपचारिकताओं के पूर्ण होने तथा शुल्क के सफल सत्यापन के उपरांत अभ्यर्थी को औपचारिक रूप से कार्यक्रम में प्रवेश प्रदान कर दिया जाता है। इसके साथ ही, अभ्यर्थी को नामांकन संख्या (Enrollment Number) एवं लॉगिन विवरण (Login Credentials) प्रदान किए जाते हैं, जिनके माध्यम से वह लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) पर अध्ययन सामग्री, कक्षाएँ, असाइनमेंट एवं अन्य शैक्षणिक संसाधनों का उपयोग कर सकता है।
- इस प्रकार, यह सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध प्रवेश प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए सहज, सुरक्षित एवं पारदर्शी अनुभव सुनिश्चित करती है तथा उन्हें बिना किसी बाधा के अपने शैक्षणिक सफर की सफल शुरुआत करने में सहायक सिद्ध होती है।

17. शुल्क संरचना (Indicative)

मद	राशि (₹)
Registration Fee	1000
Tuition Per Semester	14000
Other Fee	7000
First Semester	22000
Full Course Approx	64000

18.गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली

विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु निम्न व्यवस्थाएँ करेगा:

- UGC-DEB मानकों के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण
- विशेषज्ञ समिति द्वारा समय-समय पर पाठ्यक्रम संशोधन
- Faculty Development Programmes
- Student Feedback System
- Academic Audit
- PCP Quality Review

19.शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources)

एम.ए दर्शनशास्त्र कार्यक्रम उच्च कोटि के विद्वान एवं अनुभवी प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में संचालित होता है, जो भारतीय दर्शन (विशेषतः वेदान्त, न्याय, मीमांसा, बौद्ध एवं जैन दर्शन), पाश्चात्य दर्शन, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा तत्त्वमीमांसा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में विशिष्ट दक्षता रखते हैं। ये प्राध्यापक केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, दार्शनिक चिंतन की जीवंत परम्परा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं, जिससे विद्यार्थी गहन विश्लेषण, तार्किकता एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

कार्यक्रम में ग्रंथ-केंद्रित अध्ययन (Textual Study Approach) को विशेष महत्व दिया जाता है, जिसके अंतर्गत मूल संस्कृत ग्रंथों एवं उनके भाष्यों का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही, छात्रों को दार्शनिक तर्क-

वितर्क (Dialectical Method), विमर्श (Debate), एवं आलोचनात्मक लेखन (Critical Writing) के माध्यम से सक्रिय अधिगम (Active Learning) के लिए प्रेरित किया जाता है।

प्रत्येक विद्यार्थी को अनुभवी मेंटर द्वारा व्यक्तिगत शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे शोध-प्रवृत्ति, स्वतंत्र चिंतन एवं विषय की गहराई को आत्मसात कर सकें। शोध परियोजनाओं, असाइनमेंट्स एवं प्रस्तुतीकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों को अकादमिक लेखन एवं अनुसंधान पद्धति का व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाता है। यह समग्र शैक्षणिक ढांचा विद्यार्थियों को शिक्षण, अनुसंधान, सिविल सेवा, लेखन तथा बहुविषयक (interdisciplinary) क्षेत्रों में उत्कृष्ट करियर हेतु सक्षम बनाता है।

20.अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support)

पतंजलि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई सुदृढ़ एवं आधुनिक अवसंरचना, ओपन एवं डिस्टेंस लर्निंग (ODL) प्रणाली के अंतर्गत दर्शनशास्त्र के अध्ययन को अत्यंत प्रभावी एवं सुलभ बनाती है। विश्वविद्यालय का डिजिटल शिक्षण पारितंत्र (Digital Learning Ecosystem) विद्यार्थियों को स्थान एवं समय की सीमाओं से परे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

इस अंतर्गत उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो व्याख्यान, ई-पुस्तकें, प्राचीन एवं आधुनिक दार्शनिक ग्रंथ, इंटरैक्टिव अध्ययन सामग्री तथा स्व-मूल्यांकन (Self-assessment) उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी गति से गहन अध्ययन कर सकते हैं। लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) के माध्यम से पाठ्यक्रम संचालन, असाइनमेंट सबमिशन, ऑनलाइन परीक्षा एवं प्राध्यापकों के साथ संवाद सुचारु रूप से संचालित होता है।

दार्शनिक विमर्श को सशक्त बनाने हेतु नियमित रूप से ऑनलाइन संगोष्ठियाँ, वेबिनार, एवं विचार-चर्चा सत्र आयोजित किए जाते हैं, जिनमें समकालीन विषयों तथा शास्त्रीय सिद्धांतों पर गहन चर्चा होती है। यह विद्यार्थियों में संवादात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है।

विश्वविद्यालय का डिजिटल पुस्तकालय (Digital Library) दर्शनशास्त्र से संबंधित प्राचीन शास्त्रों, टीकाओं, शोध-पत्रों, जर्नल्स एवं संदर्भ पुस्तकों का विशाल भंडार उपलब्ध कराता है, जो उच्च स्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए अत्यंत उपयोगी है।

यह समेकित एवं उन्नत अवसंरचना सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, गहन चिंतन, तार्किक विश्लेषण एवं अनुसंधान कौशल में भी दक्षता प्राप्त करें, जिससे वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्पर्धी एवं सक्षम बन सकें।

21.प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए पृथक प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं है। तथापि, अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा एक समृद्ध डिजिटल पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इस डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से शिक्षार्थियों को विविध शैक्षणिक संसाधनों, शोध-पत्रों, संदर्भ ग्रंथों तथा अन्य प्रासंगिक अध्ययन सामग्रियों तक व्यापक पहुँच प्राप्त होती है। यह व्यवस्था सतत अधिगम एवं गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होती है।

22.कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान

कार्यक्रम के अभिकल्पन, विकास, कार्यान्वयन तथा अनुरक्षण से संबंधित समस्त व्यय का वहन विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक बजट सत्र में स्वीकृत प्रावधानों के अनुरूप किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक वित्तीय संसाधनों का आवंटन विश्वविद्यालय की निर्धारित वित्तीय नीतियों एवं प्रक्रियाओं के अनुसार सुनिश्चित किया जाएगा।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

पाठ्यक्रम - M.A. - दर्शन

वर्ष- 2025-2026

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम- एम.ए.- (दर्शन)
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष
कुल सामान्य नियम एवं प्रस्तावना

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा, जिसमें चार सत्र होगें।
- प्रत्येक सत्र में चार प्रश्नपत्र होंगे, किन्तु अन्तिम सत्र में पाँचवाँ प्रश्नपत्र वैकल्पिक रूप से लघु शोध प्रबन्ध/निबन्ध परक होगा।
- दो या दो से कम क्रेडिट के पाठ्यक्रम के लिए 50 अंक निर्धारित है। तीन या तीन से अधिक क्रेडिट के पाठ्यक्रम के लिए 100 अंक निर्धारित है।
- प्रत्येक पत्र में 25 अंकों की आन्तरिक एवं 75 अंको की बाह्य परीक्षा होगी।
- परीक्षा का माध्यम इच्छानुसार हिन्दी/संस्कृत/अंग्रेजी होगा।
- प्रत्येक परीक्षा का निर्धारित समय 3 घण्टे होगा।
- परीक्षा में 45% अंक प्राप्त करने वाले छात्र को ही उत्तीर्ण माना जायेगा।

पतंजलि विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF PATANJALI
Patanjali Yog Peeth, Roorkee – Haridwar Road, Haridwar, Uttarakhand 249405

Faculty of Humanities and Ancient Studies

Department of Philosophy

Session 2025-26

MA Darshan ODL

According to NEP-2020,(as per UGC Guidelines for PG Programme)

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-101	सांख्य–योगदर्शन **I**	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-102	न्याय–वैशेषिकदर्शन **I**	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-103	वेदान्त–मीमांसादर्शन **I**	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-104	वैदिकेतरदर्शन **I**	3	1	0	4
5	Inter Disciplinary	MDPHID-105	संस्कृतव्याकरण **I**	3	1	0	4
				Total Credits			22

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-201	सांख्य–योगदर्शन **II**	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-202	न्याय–वैशेषिकदर्शन **II**	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-203	वेदान्तदर्शन **II**	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-204	वैदिकेतरदर्शन **II**	3	1	0	4
5	Inter Disciplinary	MDPHID-205	संस्कृतव्याकरण **II**	2	0	0	2
6	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-206	Research and Publication Ethics	2	0	0	2
				Total Credits			22

*** Students who Exit at the End of 1st Year shale b awarded a Postgraduate Diploma.**

Semester III

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-301	सांख्य–योगदर्शन **III**	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-302	न्याय–वैशेषिकदर्शन **III**	3	1	0	4
3	Discipline Specific Minor	MDPHMN-303	वैदिक साहित्य	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-304	प्रस्थानत्रयी **I**	3	1	0	4
5	Skill Enhancement	MDPHSE-305 (1)	सस्वरवेदपाठ	1	0	2	2
	Skill Enhancement	MDPHSE-305 (2)	भारतीयसंगीत–गायन				
	Skill Enhancement	MDPHSE-305 (3)	भारतीयनृत्यपरिचय (भरतनाट्यम्)				
6	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-306	Research Medothology	3	1	0	4
Total Credits							22

Semester IV

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-401	सांख्य–योगदर्शन **IV**	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-402	न्याय–वैशेषिकदर्शन **IV**	4	1	0	5
3	Discipline Specific Minor	MDPHMN-403	उपनिषद् बोध	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-404	प्रस्थानत्रयी **II**	2	1	2	4
5	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-405	Project/Dissertation	0	1	6	4
Total Credits							22

संकायाध्यक्षा एवं विभागाध्यक्षा

प्रो. साध्वी देवप्रिया
दर्शन विभाग
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

MDPHMJ-101 –सांख्य–योगदर्शन I

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योग एवं सांख्य के प्रमुख सिद्धान्तों का अवबोध कराना।
- योग व सांख्य के प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।
- योग एवं सांख्य के इतिहास एवं परम्पराओं का ज्ञान कराना।

परिणाम-

- योगदर्शन के समाधिपद के सूत्रार्थ एवं भाष्य-व्याख्यान में दक्ष होना।
- सांख्य के 'विषयाध्याय' के ब्रहामुनिभाष्य सहित सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ करने में कुशल होना।
- योग एवं सांख्य के परस्पर सम्बद्धता को जानकर समन्वयात्मक दृष्टि का विकास होना।

खण्ड-1 सांख्य विषय का प्रतिपादन–

इकाई-1.1 सांख्य शब्द का अर्थ एवं परिभाषा,
इकाई-1.2 त्रिविध दु:खों का स्वरुप एवं निवृत्ति,
इकाई-1.3 त्रिविध प्रमाण निरुपण,
इकाई-1.4 आत्मा देहादि से व्यतिरिक्त।

खण्ड-2 प्रधान के कार्यों का निरुपण

इकाई-2.1 प्रकृति की प्रवृत्ति का प्रयोजन,
इकाई-2.2 सृष्टि प्रक्रिया निरुपण,
इकाई-2.3 स्वस्थ की परिभाषा, त्रिगुण स्वरुप निरुपण,
इकाई-2.4 इन्द्रियो की अभौतिकता का निरुपण।

खण्ड-3 योग का स्वरुप

इकाई-3.1 योग दर्शन का रचनाकाल एवं महर्षि पतंजति जी का संक्षिप्त परिचय,
इकाई-3.2 योग शब्द का अर्थ एवं परिभाषा (व्युत्पत्ति),
इकाई-3.3 योग का स्वरुप
इकाई-3.4 चित्त की वृत्तियाँ।

खण्ड-4 वृत्ति निरोध एवं समाधि के प्रकार

इकाई-4.1 चित्त की 5 भूमियाँ,
इकाई-4.2 चित्त वृत्ति निरोध का उपाय-अभ्यास,

इकाई-4.3 चित्त वृत्ति निरोध का उपाय-वैराग्य,

इकाई-4.4 समाधि और समाधि के प्रकार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी, ऋगवेदादिभाष्य भूमिका दयानन्द सरस्वती प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट।

सहायक ग्रन्थ– भारतीय दर्शन (डॉ० राधा कृष्णन्), भारतीय दर्शन का इतिहास-प्रथम भाग (डॉ० जयदेव वेदालंकार)। सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्द प्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-102 - न्याय–वैशेषिकदर्शन I

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का अवबोध कराना।
- न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।
- न्याय व वैशेषिक के पदार्थों से अवगत कराना।

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

परिणाम-

- न्याय व वैशेषिक में निहित पदार्थों का ज्ञान।
- न्याय व वैशेषिक के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण।

खण्ड-1 पदार्थों की परिभाषा एवं प्रमाणादि स्वरुप निरुपण

इकाई-1.1 न्यायदर्शन के 16 पदार्थों की परिभाषा,
इकाई-1.2 प्रमाणविभाग एवं निरुपण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द),
इकाई-1.3 प्रमेयविभाग एवं निरुपण (आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मनस, प्रवृत्ति, दोष, प्रत्यभाव, फल, दु:ख एवं अपवर्ग),
इकाई-1.4 संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय आदि पदार्थों का निरुपण।

खण्ड-2 इकाई द्वितीय- तर्कशास्त्र और वाद-विवाद के प्रकार
इकाई-2.1 वाद, जल्प, वितण्डा का निरुपण, हेत्वाभास,
इकाई-2.2 छल, जाति एवं निग्रहस्थान का निरुपण,
इकाई-2.3 विविध जातियों का लक्षण तथा समाधान,
इकाई-2.4 षट्पक्षीनिरुपण, निग्रहस्थान का विभाग एवं लक्षणों की परीक्षा।

खण्ड-3 षड्पदार्थों का लक्षण परिचय
इकाई-3.1 धर्म का लक्षण द्रव्य-गुण एवं कर्म के भेद,
इकाई-3.2 द्रव्य-गुण एवं कर्म का परस्पर साधर्म्य द्रव्य-गुण-कर्म का लक्षण,
इकाई-3.4 द्रव्य-गुण व कर्मो का परस्पर कार्य-कारण भाव कार्य-कारण सम्बन्ध,
इकाई-3.4 सामान्य एवं विशेष नामक पदार्थ।

खण्ड-4 पृथिव्यादि सात द्रव्यों की परीक्षा
इकाई-4.1 पृथिव्यादि पञ्चमहाभूतों के गुणों की परीक्षा,
इकाई-4.2 काल के लक्षण एवं परीक्षा,
इकाई-4.3 दिशा लक्षण एवं परीक्षा,
इकाई-4.4 'शब्द' का अनियत्व।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ- 1. न्यायदर्शनविद्योदयभाष्य सहित आचार्य उद्यवीर शास्त्री

2. न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित)
3. वैशेषिक दर्शन उदयवीर शास्त्री
4. वैशेषिक दर्शन आनन्द प्रकाश
5. प्रशस्तपाद भाष्य ढुण्डीराजशास्त्री

MDPHMJ-103 - वेदान्त–मीमांसादर्शन I

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

- वेदान्त के मौलिक सिद्धांतों से परिचय कराना।
- वेदान्त के प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों को तर्कपाद से अवगत कराना।
- मीमांसा के धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराना।

खण्ड-1 ब्रह्मावबोध-1

इकाई-1.1 ब्रह्म जिज्ञासा प्रकरण एवं जगत रचना में निमित्त कारण ब्रह्म,
इकाई-1.2 उपनिषदों में वर्णित आनंदमय आदि शब्दों की ब्रह्मवाचकता तथा उपनिषदों में भिन्न- भिन्न नामों से ब्रह्म का उपास्र,
इकाई-1.3 ब्रह्म की अनुभूति का स्थान,
इकाई-1.4 वैश्वानर ब्रह्म का विराट् स्वरूप।

खण्ड-2 ब्रह्मावबोध-2

इकाई-2.1 द्यु, भू आदि का आश्रय एवं अक्षर,
इकाई-2.2 भूमा, आकाश, प्राण, ज्योति नामों की ब्रह्मवाचकता,
इकाई-2.3 मनुष्य मात्र को ब्रह्म साक्षात्कार का अधिकार, वेदनित्यता,
इकाई-2.4 वेदाध्ययन में वर्णमात्र का अधिकर,
इकाई-2.5 जगत उत्पत्ति में परमात्मा निमित्त कारण और त्रिगुणात्मिका प्रकृति परमात्मा के अधीन एवं उपादान कारण।

खण्ड-3 धर्मादि निरुपणम

इकाई-3.1 धर्मजिज्ञासा (सू-1),
इकाई-3.2 धर्मलक्षण (सू-2),
इकाई-3.3 धर्मप्रामणयपरीक्षा (सू-3),
इकाई-3.4 धर्म के विषय में प्रत्यक्षादि की अप्रमाणिकता (सू-4)।

खण्ड-4 वेदनित्यता प्रकरण

इकाई-4.1 वेदविधिप्रामणय (सू-5),
इकाई-4.2 शब्द की नित्यता (सू-6-23),
इकाई-4.3 वाक्यार्थ का प्रामण्य (सू-24-26),
इकाई-4.4 वेद की अपौरुषेयता (सू-27-32)।

परिणाम-

- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण
- वेदान्त प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों का तर्कपाद से परिचय।
- धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), । शाबरभाष्य व्याख्या -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

MDPHMN-104 - वैदिकेतरदर्शनम् I

CREDIT: .04

CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का ज्ञान कराना।
- प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक मत एवं सिद्धान्तों का जानना।
- बुद्धिवादी, अनुभववादी एवं समीक्षात्मक दर्शन का तुलनात्मक परिचय व ज्ञान मीमांसीय, तत्व मीमांसीय एवं आचार मीमांसीय बोध कराना।
- पाशचात्य दर्शन के इतिहास को भलीभांति जानना।

परिणामः-

- ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का विवरण।
- प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों की विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त होगी।
- बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्तों का विवरण प्राप्त होगा।
- भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के बारे में तुलनात्मक चिंतन विकसित होगा।

- **खण्ड-1 सुकरात पूर्व के दार्शनिक एवं उनके प्रमुख मत**
- इकाई-1.1 थेल्स, एनेक्जीमेंडर, एनेक्जिमेनीज, पाइथागोरस, हेरेक्लाइट्स, पाइथागोरस, हेरेक्लाइट्स, पार्मेनीडिज, सॉफिस्ट प्रोटेगोरस, जॉर्जियस
- इकाई-1.2 सुकरात- दार्शनिक पद्धति, सद्गुण, ज्ञान का सिद्धान्त
- इकाई-1.3 लेटा- प्रत्यय, ज्ञानमीमांसा, आत्मा की अमरता
- इकाई-1.4 अरस्तु- द्रव्य एवं स्वरूप, कारणता का सिद्धान्त, ईश्वर की अवधरणा
- **खण्ड-2 आधुनिक दर्शन (बुद्धिवाद)**
- इकाई-2.1 रेने देकार्त- द्रव्य विचार, आत्मा का विचार, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण, क्रिया-प्रतिक्रियावाद
- इकाई-2.3 स्पिनोजा- द्रव्य विचार, सर्वेश्वरवाद, समानान्तरवाद
- इकाई-2.4 लाईब्नित्ज- चिदणुवाद।
- इकाई-2.5 पूर्व स्थापित सामंजस्य
- **खण्ड-3 अनुभवाद**
- इकाई-3.1 बर्कले- जड़वाद की आलोचना, आत्मगत प्रत्ययवाद
- इकाई-3.2 ह्यूम-संशयवाद,
- इकाई-3.4 कार्य कारणता का सिद्धान्त, आत्मा एवं ईश्वर विचार
- **खण्ड-4 काण्ट का समीक्षावाद**
- इकाई-4.1 संश्लेषणात्मक ज्ञान एवं विश्लेषणात्मक ज्ञान
- इकाई-4.2 बुद्धि की कोटियाँ
- इकाई-4.3 देश काल की अवधरणा
- इकाई-4.4 संवृति एवं परमार्थ, अज्ञेयवाद।

रवीन्द्रनाथ टैगोरः- सत् एवं ईश्वर की सिद्धि के प्रमाण, आत्मा एवं शरीर, अशुभ की समस्या, मानववाद।

श्री अरविन्दः- शुद्ध सत्, चित्त शक्ति, आनन्द, पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धान्त, अज्ञान एवं अज्ञान के सप्तरूप, विविध रूपान्तरण, अति मानव की अवधारणा, पूर्ण अद्वैत योग।

राधा कृष्णनः- परम सत्, आत्म-स्वरूप, धार्मिक अनुभूति, अन्तर्दृष्टि।

योगऋषि स्वामी रामदेव- योग, योगमुक्त, आयुर्वेद

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पाश्चात्य एवं आधुनिक दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास- डॉ जगदीश सहाय श्रीवास्तव, प्रकाशन-किताब महल, 22 ए, सरोजिनी नायडु मार्ग, प्रयाग राज।

पाश्चात्य दर्शन-चन्द्रधर शर्मा। प्रकाशक- मोतीलाल, बनारसीदास, 41 यू,ए, बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007, चौक, वाराणसी, 221001, अशोक राजपथ, पटना- 800004

MDPHID-105 - संस्कृतव्याकरणम् I

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- **प्रारम्भिक छात्रों को व्याकरण के मूलभूत सिद्धान्तों से अवगत कराना।**
- **अध्येताओं को व्याकरण के माध्यम से संस्कृतभाषा के लेखन, अध्यन-अध्यापन में कुशल बनाना।**
- **अध्येताओं को व्याकरण के द्वारा सम्भाषण एवं व्यावसायिक कुशलता प्रदान करना।**

परिणाम

- **अध्येता संस्कृत भाषा के व्याकरण के सिद्धान्तों में निपुण हो जाता है।**
- **विद्यार्थी व्याकरण के द्वारा भाषा के पठन-पाठन लेखन एवं सम्भाषण में कुशलता प्राप्त कर लेता है।**
- **अध्येता व्याकरण की रचनाशैली से भी अवगत हो जाता है।**

खण्ड-1- **पाणिनिवर्णोच्चारणशिक्षा।**

खण्ड-2 **संज्ञासमासप्रकरणम्**

खण्ड-3 विभक्तीनुवादप्रकरणम्

खण्ड-4- **प्रत्ययसन्धिशब्दरूपप्रकरणम्**

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- व्याकरण चन्द्रोदय-1, लेखक-डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।
सहायक ग्रन्थ- लघु सिद्धान्त कौमुदी चौखम्बा

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

MDPHMJ-201 - सांख्ययोगदर्शन II

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योगदर्शन के साधनपाद का सम्भाष्य बोध कराना।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय का समग्र बोध कराना।
- उपरोक्त ग्रन्थों का भाष्याधारित व्याख्यान से अवगत कराना।

परिणाम-

- योग के साधनपाद के सूत्रों का व्यासभाष्य के आधार पर प्रामाणिक सूत्रार्थ एवं भावार्थ में समर्थ होना।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय के समग्र सूत्रों का सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ करने में दक्ष होना।
- उपरोक्त ग्रन्थों के सन्दर्भ में भाष्यकार की दृष्टिकोण का विकास होना।

खण्ड-1 ज्ञान और वैराग्य की महिमा

इकाई-1.1 जीवात्मा का संसरण,
इकाई-1.2 भूत चैतन्यविषयक विचार,
इकाई-1.3 ध्यान का स्वरुप एवं वृत्ति निरोध के उपाय,
इकाई-1.4 बुद्धिसर्ग का निरुपण।

खण्ड-2 वैराग्याध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ

इकाई-2.1 चौदह प्रकार की प्राणि सृष्टि,
इकाई-2.2 सांख्य और ईश्वरवाद,
इकाई-2.3 बन्ध और मोक्ष निरुपण,
इकाई-2.4 कर्मफल व्यवस्था

खण्ड-3 ईश्वर स्वरुप वर्णन

इकाई-3.1 ईश्वर का स्वरुप, ईश्वर का निज नाम,
इकाई-3.2 ईश्वर का निज नाम,
इकाई-3.3 चित्त की प्रसन्नता एवं एकाग्रता के विभिन्न उपाय।

खण्ड-4 क्रिया योग एवं पञ्च क्लेश

इकाई-4.1 किया योग की परिभाषा,
इकाई-4.2 क्रिया योग का फल, पञ्च क्लेश,
इकाई-4.3 अविद्या क्लेशों की जननी।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यकारिका (गौडपाद भाष्य सहित) प्रकाशक- 41 यू.ए. बंग्लो रोड, जवाहर नगर,

दिल्ली-110007, अशोक राजपथ, पटना-800004 एवं चौक, वाराणसी-221001,पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-202 - न्याय–वैशेषिकदर्शन II

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को सरलतम रीति से अवबोध करना।

परिणाम-

- न्याय व वैशेषिक पदार्थों के लक्षणों की प्रामाणिकता की पुष्टि।

खण्ड-1 संशय एवं प्रमाणों की परीक्षा

इकाई-1.1 संशय की परीक्षा,
इकाई-1.2 प्रमाणों की सामान्य परीक्षा,
इकाई-1.3 अनुमान प्रमाण की परीक्षा,
इकाई-1.4 उपमान प्रमाण की परीक्षा एवं शब्द प्रमाण की सामान्य परीक्षा।

खण्ड-2 शब्द का विश्लेषण।
इकाई-2.1 शब्द प्रमाण की विशेष परीक्षा,
इकाई-2.2 प्रमाण चतुष्टय पर चर्चा,
इकाई-2.3 शब्द अनित्यत्व की परीक्षा,
इकाई-2.4 शब्द परिणाम एवं शब्द शक्ति की समीक्षा।

खण्ड-3 मन, आत्मा, नामक द्रव्यों की परीक्षा
इकाई-3.1 हेतु एवं हेत्वाभास के लक्षण तथा प्रकार,
इकाई-3.2 आत्मा के साधक लिङ्ग,
इकाई-3.3 आत्मा की सिद्धि में अनुमान-प्रमाण की सार्थकता,
इकाई-3.4 आत्मा के द्रव्यतव-नित्यत्व एवं नानात्व में हेतु।

खण्ड-4- पृथिव्यादि चारों भूतों के कार्यो का विवेचन
इकाई-4.1 परमाणुवाद, पृथिव्यादि चारों भूतों के कार्य,
इकाई-4.2 शरीर के पाञ्जभौतिकत्व एवं त्रिभौतिकत्व का निषेध,
इकाई-4.3 योनिज एवं अयोनिज शरीर,
इकाई-4.4 अयोजिन शरीर के अस्तित्व में हेतु।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन, वात्स्यायनभाष्य सहित प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ- 1. न्यायदर्शनविद्योदयभाष्य सहित आचार्य उद्यवीर शास्त्री
2. न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित)
3. वैशेषिक दर्शन उदयवीर शास्त्री
4. वैशेषिक दर्शन आनन्द प्रकाश
5. प्रशस्तपाद भाष्य ढुण्डीराजशास्त्री

MDPHMJ-203 - वेदान्तदर्शन II

CREDIT: .04

CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों से इतर सिद्धान्तों का तुलनात्मक परिचय करवाना।

परिणाम-

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान।
- वेदांत के सिद्धान्तों एवं अन्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक ज्ञान।

खण्ड-1 सिद्धान्तावबोध-**१**

इकाई-1.1 जगत उत्पत्ति मेंf **भिन्न-भिन्न** स्मृति शास्त्रों में प्रतिपादित निमित्त उपादान उभय कारणवाद विमर्श,

इकाई-1.2 जगत उत्पत्ति कार्य में जीव का निषेध,

इकाई-1.3 जीव का कर्म ही सृष्टि वैचित्र्य मे कारण,

इकाई-1.4 परमात्मा को सृष्टि कार्य में करणों की अनपेक्षा एवं प्रकृति में कार्य जगत का सत होना ।

खण्ड-2 सिद्धान्तावबोध-२

इकाई-2.1 वेदान्त सिद्धान्त में प्रकृति का स्वतन्त्र उपादान कारण न होना एक तार्किक समीक्षा,

इकाई-2.2 न्याय वैशिषकों की परमाणुवाद का खण्डन,

इकाई-2.3 बौद्धों का क्षणिकवाद का खण्ड,

इकाई-2.4 असत्-कारणवाद का निराकरण विज्ञानवाद का खण्डन अनेकांतवाद का खण्दन, ईश्वर साकारवाद का खण्डन ।

खण्ड-3 सिद्धान्तावबोध-३

इकाई-3.1 आकाश की उत्पत्ति का विचार,

इकाई-3.2 जीवात्मा स्वरूपविचार,

इकाई-3.3 जीवात्मा का परिमाण निरूपण, जीवात्मा का एकदेशत्व समर्थन्,

इकाई-3.4 जीवात्मा कि कतृत्व विचार जीवात्मा परमात्म का अंश है।

खण्ड-4- **सिद्धान्तावबोध-४**

इकाई-4.1 इन्द्रिय (प्राण स्वरूप) विचार,

इकाई-4.2 मुख्यप्राणस्वरूप विचार,प्राणों का जीवात्माधीन कर्तृत्व,

इकाई-4.3 भूताधिका से शरीर को भूत का नाम से व्यवहार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र) आचार्य उदयवीर शास्त्री।

MDPHMN-204 - वैदिकेतरदर्शनम् II

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

उद्देश्य-

समकालीन प्रमुख भारतीय दार्शनिकों से विद्यार्थियों का परिचय करवाना।

समकालीन दार्शनिक चिन्तन एवं प्रमुख अवधारणाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

भारतीय दार्शनिक परम्परा के विकास में समकालीन दार्शनिकों के योगदान के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराना।

खण्ड- 1 स्वामी विवेकानन्द एवं रविन्द्रनाथ टैगोर

इकाई- 1.1 स्वामी विवेकानन्द- धर्म का आशय, धर्म का उद्भव

इकाई- 1.2 धर्म का स्वरुप, धर्म का महत्व एवं मूल्य

इकाई- 1.3 सार्वभौमिकता - धर्म का स्वरूप एवं आदर्श

इकाई- 1.4 रविन्द्रनाथ टैगोर- अशुभ की समस्या

खण्ड- 2 महर्षि अरविन्द, राधाकृणन

इकाई- 2.1 महर्षि अरविन्द- त्रिविध रूपान्तरण स्वचेतना

इकाई- 2.2 अतिमानव की अवधारणा, ज्ञान पुरुष, दिव्य जीवन

इकाई- 2.3 राधाकृणन-धार्मिक अनुभूति, अन्तर्दृष्टि

इकाई- 2.4 बुद्धि और अर्न्तदृष्टि, अर्न्तदृष्टि का स्वरूप

खण्ड- 3 शंकराचार्य, रामानुजाचार्य

इकाई- 3.1 शंकराचार्य- अद्वैत ब्रह्मसूत्र के परसद्विधा भाष्यकार, प्रमुख आचार्य

इकाई- 3.2 वेदान्त तत्वमीमांसा, आत्मा का स्वरूप, अनिर्वचनीयतावाद, माया, ईश्वर, जगत् विचार

इकाई- 3.3 रामानुजाचार्य- विशिष्टाद्वैत के आचार्य-ब्रह्मवचिार, तत्वमीमांसा

इकाई- 3.4 ईश्वर, उपास्य ब्रह्म, जीव और ईश्वर, सत्य का लक्षण

खण्ड- 4 मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, बल्लभाचार्य

इकाई- 4.1 मध्वाचार्य -द्वैत वाद पदार्थ-मीमांसा, जीव, परमात्मा, भेद का स्वरूप

इकाई- 4.2 निम्बार्काचार्य - द्ववैताद्वैत पदार्थ-मीमांसा, जीव, जड़ तत्व, अंश-अंशी विचार, ईश्वर

इकाई- 4.3 बल्लभाचार्य-शुद्धाद्वैतवाद-ब्रह्म, जगत

इकाई- 4.4 पुष्टिमार्ग।

परिणाम-

विद्यार्थी समकालीन भारतीय दार्शनिकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें जिससे उनके दार्शनिक एवं वैचारिक विकास संभव हो सकेगा।

विद्यार्थी यह समझने में समर्थ हो सकेंगे कि दार्शनिक विचारधारा किस प्रकार व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्रीय राजनीति एवं सामाजिक संरचना को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

MDPHID-205 - संस्कृतव्याकरणम् II

CREDIT: .02

CA: 15

SEE: 35

MM: 50

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- संस्कृत साहित्य के सम्यक् ज्ञान हेतु संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न कारकों व विभाक्तियों में ज्ञान कराना।
- सुसंस्कृत पदों की रचना हेतु समास की विधा से परिचय कराना।

परिणाम

- संस्कृत व्याकरण के आधारभूत ज्ञान से शब्दों की वैज्ञानिक पद्धति से परिचित होकर शब्दार्थ व वाक्यार्थ बोध करने व कराने में सक्षम हो जाता है।
- संस्कृत वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न कारकों, विभक्तियों, समास के ज्ञान में पारंगत हो जाता है।?

खण्ड-1- विभक्तिः कारकप्रकरणञ्च

इकाई- 1.1 संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न कर्त्ता कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय

इकाई- 1.2 कर्म, कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय करण,

इकाई- 1.3 कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय)

इकाई- 1.4 विभक्तियों (प्रथमा, द्वितीया, तृतीया) का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय।

खण्ड-2- विभक्तिः कारकप्रकरणञ्च

इकाई- 2.1 संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त सम्प्रदान कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय

इकाई- 2.2 अपादान, कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय

इकाई- 2.3 अधिकरण कारक का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय

इकाई- 2.4 विभक्तियों (चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी) का सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय।

खण्ड-3 समास प्रकरणम् 1

विषय- संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न कारकों (अव्ययीभाव, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, तत्पुरुष, समास) तथा उनके विभिन्न सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय।

खण्ड-4 समास प्रकरणम् 2

विषय- संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न कारकों (षष्ठी, सप्तमी, तत्पुरुषसमास, बहुव्रीही, द्वन्द्व समास) तथा उनके विभिन्न सूत्र एवं उदाहरणों सहित परिचय।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- व्याकरण चन्द्रोदय-2, लेखक-डॉ.आचार्या साध्वी देवप्रिया
प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।

MDPHRE-206 - Research and Publication Ethics

CREDIT: .02

CA: 15
SEE: 35
MM: 50

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः-

- विद्यार्थियों को शोध प्रकाशन प्रक्रिया एवं पद्धति के बारे में अवगत कराना।
- शोध के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराना।
- शोध सम्बन्धित नैतिकता के विभिन्न पक्षों से अवगत कराना।

खण्ड-1 शोध का अर्थ, परिभाषा एवं परिचय

इकाई- 1.1 अनुसंधान-परिभाषा,

इकाई- 1.2 शोध के विभन्न प्रकार, शोध के उद्देश्य,

इकाई- 1.3 शोध का क्षेत्र,शोध में नैतिकता के आधार,

इकाई- 1.4 वैज्ञानिक विधियाँ, तथ्य, परिकल्पना, सिद्धांत और नियम

खण्ड-2 प्रकाशन, शोध प्रपत्र, लेख

इकाई- 2.1 संदर्भ ग्रंथ संबधित जानकारी, प्रकाशन के आवश्यक तत्व,

इकाई- 2.2 शुद्धिकरण के विविध ढंग,

इकाई- 2.3 शोध पत्रिका परिचय, साहित्य समीक्षा।

खण्ड-3 शोध के विविधि नैतिक आयाम

इकाई- 3.1 शोध एवं साहित्य परिचय **एवं** समीक्षा,

इकाई- 3.2 शोध अध्ययन पर आधारित पायलट अध्ययन,

इकाई- 3.3 परिणाम एवं विवेचन संबधित अध्ययन,

इकाई- 3.4 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची निर्माण की विधि

खण्ड-4 शोध में नैतिक समस्याएँ एवं सिद्धान्त

इकाई- 4.1 शोध-अभिकल्प के सिद्धान्त,

इकाई- 4.2 साक्षात्कार,

इकाई- 4.3 शोध में नैतिक समस्याएँ,

इकाई- 4.4 शोध में नैतिकता के विभिन्न सिद्धान्त।

परिणामः-

- शोध की प्रक्रिया एवं प्रकाशन के बारे में आनुभविक ज्ञान प्राप्त होगा।
- शोध के विभिन्न आयामों की जानकारी प्राप्त होगी एवं उसे व्यवहारिक रूप में अपनाने में सहायता प्राप्त होगी।
- विद्यार्थियों को शोध सम्बन्धित नैतिकता के मानदण्डों की आधारभूत एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

MDPHMJ-301 - सांख्य–योगदर्शन III

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योगदर्शन के तृतीय विभूतिपाद के व्यास-भाष्य का बोध कराना ।
- सांख्य के चतुर्थ आख्यायिकाध्याय के ब्रहामुनि भाष्य सहित अवबोध कराना ।
- उपरोक्त ग्रन्थों के वैशिष्ट्य का बोध कराना ।

खण्ड-1 सांख्यतत्त्वों का सुगम बोध

इकाई-1.1 विवेकज्ञान की प्राप्ति हेतु अभ्यास और वैराग्य का माहात्म्य,

इकाई-1.2 बहुसंगति में दोष दर्शन,

इकाई-1.3 आचरण की श्रेष्ठता,

इकाई-1.4 भोग से राग की शान्ति नहीं।

खण्ड-2 सत्कार्यवाद स्थापन असत्कार्यवाद निराकरण,

इकाई-2.1 चेतन का अपरिणामित्व,

इकाई-2.2 जगत् के निर्माण में अदृष्ट निमित्त,

इकाई-2.3 वेदों का नित्यत्व,

इकाई-2.4 सत्कार्यवाद का निरूपण।

खण्ड-3 अष्टांग योग

इकाई-3.1 दृश्य का स्वरुप,

इकाई-3.2 दृष्टा का स्वरुप,

इकाई-3.3 अष्टांग योग का वर्णन,

इकाई-3.4 अष्टांग योग का फल

खण्ड-4 संयम

इकाई-4.1 संयम का स्वरुप,

इकाई-4.2 संयम का फल,

इकाई-4.3 योग के अन्तरंग साधन,

इकाई-4.4 योग के बाह्य साधन

परिणामः

योगदर्शन में वर्णित तृतीय विभूतिपाद में वर्णित विभिन्न विभूतियों का ज्ञान होना ।

सांख्य में आख्यायिकाध्याय में निर्देशित आख्याधिकायों के माध्यम से सांख्य तत्वों का सुगम बोध होना ।

उपरोक्त ग्रन्थों के द्वारा सन्दर्भ में भाष्यकार की दृष्टि का विकास होना ।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-302 - न्याय–वैशेषिकदर्शन III

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना एवं तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद भाष्य का बोध कराना।

परिणाम-

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय का विस्तृत बोध।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सम्पूर्ण परिचय।

खण्ड-1 आत्मा इन्द्रिय आदि की परीक्षा

इकाई-1.1 इन्द्रियशरीर आदि से व्यतिरक्त आत्मा का निरूपण,

इकाई-1.2 आत्मनित्यत्व विचार,

इकाई-1.3 शरीर एंव इन्द्रिय का विश्लेषण,

इकाई-1.4 इन्द्रियनानात्व परीक्षा प्रकरण।

खण्ड-2 बुद्धि मनस एवं शरीरोत्पत्ति का विचार

इकाई-2.1 बुद्धि अनियत्व परीक्षा,

इकाई-2.2 बुद्धि के आत्मगुणत्व की परीक्षा,

इकाई-2.3 मनस की परीक्षा,

इकाई-2.4 शरीरोत्पति में अदृष्ट की कारणता।

खण्ड-3 लौकिक कर्म एवं वैदिक कर्म

इकाई-3.1 कर्मो की उत्पत्ति नानात्व, वेग संस्कार,

इकाई-3.2 अदृष्टजन्य कर्मो का वर्णन,

इकाई-3.3 तमस् (अन्धकार) के द्रव्यत्व का निषेध, निष्क्रिय पदार्थो का वर्णन,

इकाई-3.4 वेद के बुद्धिपूर्वक में हेतु, अद्वष्टोत्पादक वैदिक कर्मो का वर्णन, उपधा एवं अनुपधा, शुचि एवं अशुचि द्रव्य, रागोत्पत्ति के विभिन्न हेतु।

खण्ड-4 रुपादि से लेकर संयोग विभाग पर्यन्त गुणों की परीक्षा

इकाई-4.1 पृथ्व्यादि चारों भूतों के गुणों एवं परिमाण नामक गुण की परीक्षा,

इकाई-4.2 संख्या एवं पृथक्त्व नामक गुण की परीक्षा,

इकाई-4.3 संयोग एवं विभाग नामक गुणों की परीक्षा,

इकाई-4.4 समवाय सम्बन्ध का निरुपण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन- वात्स्यायनभाष्य सहित, प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।, प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, वैशेषिक

दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ-

- न्यायदर्शनविद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री,
- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित)ढुण्ढिराजशास्त्री,
- वैशेषिक दर्शन उदयवीर शास्त्री
- वैशेषिक दर्शन आनन्द प्रकाश
- प्रशस्तपाद भाष्य ढुण्डीराजशास्त्री

MDPHMN-303 - वैदिक साहित्य

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित अनेक (आत्म कल्याण से विश्व कल्याण) विषयों के स्वरूप से अवगत कराना।

परिणाम-

- विद्यार्थी वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित विषय से पूर्णरूप से अवगत हो जाता है।
- विद्यार्थी वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) के गहन अध्ययन से देश काल परिस्थिति में विचलित नहीं होता उस के जीवन में ठहराव आ जाता है।
- विद्यार्थी के जीवन में सुख-शान्ति व दिव्यता का आधान होता है।

खण्ड-1

इकाई-1.1 एकादश उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय
इकाई-1.2 केनोपनिषद् (प्रथम व द्वितीय खण्ड), कठोपनिषद् द्वितीय बल्ली
(श्रेय-प्रेय मार्ग, विद्या अविद्या, हृदय गुहा में स्थित ओ३म्)
इकाई-1.3 ब्रह्म की सोलह कलाएं (प्रश्नो.), विराट् पुरुष से ही सब कुछ उत्पन्न है। (मुण्डको.)
इकाई-1.4 अन्न की महिमा (तैत्तिरीयो.), ब्रह्मचर्य की महिमा श्वेतकेतु को उसके पिता का
तत्वमसि का उपदेश (छान्दोग्य.)

खण्ड-2

इकाई-2.1 प्रजापति इन्द्र तथा विरोचन की कथा (आत्मा को जानों) (छान्दोग्य.)
इकाई-2.2 उद्यालक आरुणि संवाद, अन्न ब्रह्म, प्राणब्रह्म, वाक्ब्रह्म (बृहदारण्यक)
इकाई-2.3 श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता
इकाई-2.4 श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म का महत्त्व एवं स्वरूप अपरिहार्यता।

खण्ड-3

इकाई-3.1 पाप में प्रवृत्ति के हेतु तथा मनादि इन्द्रियों का निग्रह
इकाई-3.2 श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ का माहात्म्य एवं मुक्ति के साधन
इकाई-3.3 ईश्वर में समाहित ब्रह्माण्ड, क्षेत्र-श्रेत्रज्ञ निरूपण, प्रकृति और पुरुष निरूपण
इकाई-3.4 गुणत्रयनुरूप कर्त्ता एवं कर्मफल

खण्ड-4

इकाई-4.1 दैवासुर संपद विभाग (दैवी एवं आसुरी सम्पदा का परिचय एवं फल)
इकाई-4.2 श्रीमद्भगवद्गीतानुसार तीन प्रकार का आहार
इकाई-4.3 त्याग का स्वरूप, मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर मनुष्यों के 4 कर्म
इकाई-4.4 श्रीमद्भगवद्गीतानुसार दिव्य लक्ष्य तक पहुँचने के उपाय।

सहायक ग्रन्थ-

उपनिषद् संदेश, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।
एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार।
ईशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर।

MDPHMN-304 - प्रस्थानत्रयी-प्रथम

CREDIT: .04

CA: 25
SEE: 75
MM: 100

उद्देश्य-

- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी में सन्निहित ईश्वर जीव प्रकृति के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना।

खण्ड-1

इकाई-1.1 उपनिषदों में पुनर्जन्म सिद्धान्त
इकाई-1.2 उपनिषदों में अवस्था त्रय नियामक एवं कर्म फलदाता-ईश्वर
इकाई-1.3 उपनिषदों में सर्वत्र ब्रह्म उपास्य प्रकरण
इकाई-1.4 उपनिषदों में ब्रह्म के गुणों का उपसंहार

खण्ड-2

इकाई-2.1 श्रीमद्भगवद्गीता में पुनर्जन्म सिद्धान्त
इकाई-2.2 श्रीमद्भगवद्गीता में स्थित प्रज्ञ के लक्षण
इकाई-2.3 श्रीमद्भगवद्गीता में भक्तियोग का स्वरूप
इकाई-2.4 श्रीमद्भगवद्गीता में ब्रह्म का स्वरूप।

खण्ड-3

इकाई-3.1 वेदान्त में पुनर्जन्म सिद्धान्त
इकाई-3.2 अवस्था त्रय नियामक एवं कर्म फलदाता-ईश्वर
इकाई-3.3 सर्वत्र ब्रह्म उपास्य प्रकरण
इकाई-3.4 ब्रह्म के गुणों का उपसंहार

खण्ड-4

इकाई-4.1 विरजा नदी प्रकरण
इकाई-4.2 ब्रह्म के गुणों का व्यतिहार प्रकरण
इकाई-4.3 ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति
इकाई-4.4 सर्वाश्रमों का कर्त्तव्यकर्म निरुपण एवं संन्यासश्रम
का विधि निषेध प्रकरण

परिणाम-

- विद्यार्थी प्रस्थानत्रयी में सन्निहित विषय से पूर्णरूप से अवगत हो जाता है।
- विद्यार्थी प्रस्थानत्रयी के गहन अध्ययन से देश काल परिस्थिति में विचलित नहीं होता उस के जीवन में ठहराव आ जाता है।
- विद्यार्थी के जीवन में सुख-शान्ति व दिव्यता का आधान होता है।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक- वेदान्तदर्शनं, ब्रह्ममुनिभाष्योपेतम्, स्वामी ब्रह्ममुनिः परिव्राजकः। माता तुलसादेवी हुकमचन्द धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)।

MDPHSE-305 (1) - सस्वरवेदपाठः

CREDIT: .02

CA: 15
SEE:35
MM: 50

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

खण्ड-१

इकाई-1.1 वैदिक वाङ्मय परिचय

इकाई-1.2 वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

इकाई-1.3 वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

इकाई-1.4 वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।

इकाई-1.5 मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

खण्ड-२

इकाई-2.1 ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-2.2 वायु सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-2.3 वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-2.4 पुराने पाठ का आवृत्ति।

खण्ड-३

इकाई-3.1 पुरुष सुक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-3.2 नासदीय सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-3.3 बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-3.4 पुराने पाठ का आवृत्ति।

खण्ड-४

इकाई-4.1 कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

इकाई-4.2 पुराने पाठ का आवृत्ति।

इकाई-4.3 मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

इकाई-4.4 स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

इकाई-4.5 संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि, वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

MDPHSE-305 (2) - भारतीयसंगीतम्—गायनम्

CREDIT: .02

CA: 15
SEE: 35
MM:50

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- पाठ्यक्रम छात्रों को विषय या कौशल के बारे में कौशल ज्ञान और प्रदान करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और ज्ञान के प्रति विश्वास बनाने में मदद करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है.

सैद्धांतिक + क्रियात्मक

खण्ड-1 भारतीय संगीत का इतिहास

इकाई-1.1 वैदिक काल

इकाई-1.2 मध्यकाल

इकाई-1.3 आधुनिक का

खण्ड-2 सामवेद में सामगान

इकाई-2.1 प्रकारों का अध्ययन

इकाई-2.2 उदगाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्ता

इकाई-2.3 उदात्त, अनुदात्त, स्वरित

खण्ड-3 भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र संक्षिप्त अध्ययन

28 से 33 अध्याय

खण्ड-4 शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर संक्षिप्त अध्ययन

इकाई-4.1 स्वराध्याय

इकाई-4.2 रागाध्याय

इकाई-4.3 प्रकीर्णाध्याय

इकाई-4.4 तालाध्याय

इकाई-4.5 वाद्याध्याय

इकाई-4.6 नर्तनाध्याय

परिणाम :

- पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन.
- शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि पाठ्यक्रम के लक्ष्य स्पष्ट हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रभावी तरीके से मूल्यांकन किया जा सकता है.
- छात्रों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण मे विकास, जो वे कोर्स को पूरा करने के बाद प्रदर्शित करे.

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

MDPHSE-305 (3) - भारतीयनृत्यपरिचयः (भरतनाट्यम्)

CREDIT: .02

CA: 15

SEE: 35

MM: 50

Duration: 1 semester
Mode: Practical + Theory
Course Name- Introduction of Bharatanatyam

Objective:

- To introduce students to the foundational elements of Bharatanatyam through a balanced blend of practical and theoretical training. The course aims to:
- Develop proper body posture, movement control, and rhythm awareness.
- Teach basic adavus (steps), mudras (hand gestures), and short dance sequences.
- Cultivate understanding of key theoretical concepts such as abhinaya, mudras, tala (rhythm), and the historical and cultural background of Bharatanatyam.
- Familiarize students with classical dance terminology and significant contributors to the art form.
- Prepare students to confidently perform short Bharatanatyam items with grace and understanding.

Outcome:

- Focus on building strong basics.
- Teach body control, rhythm sense, hand gestures.
- Provide simple historical, technical, and theoretical knowledge.
- Prepare students for performing small items confidently.

1- PRACTICAL

- **Namaskaram**
- **Besic Posture**:
  - Samapadam (Straight posture)
  - Araimandi (Half-sitting position)
  - Murumandi (Full sitting position)
- **Adavu**
  - Tatta Adavu (3 speeds)
  - Natta Adavu (3 speeds)
  - Sarikkal Adavu (3 speeds)
  - Teermanam Adavu
  - Parval adavu
  - Tattimetti adavu
  - Kuditamitta Adavu
- **Hast Mudras:**
  - 05Asamyukta Hasta Viniyoga (Single hand gestures)
  - 10 Samyukta Hasta Viniyoga (Double hand gestures)
  - Dhyan Shloka, Shiro Bheda, Drishti Bheda, and Greeva Bheda According to Abhinaya Darpanam
- Short **Korvais** (small step sequences combining adavus).

THEORY CONTENT (Dance Knowledge)

- History and Evolution:
  - From temples to stage
  - Importance of Bharatanatyam in Indian culture
- Brief about famous figures (Smt. Rukmini Devi Arundale, and Smt.T. Balasaraswati)

Basic Dance Terminology

- Adavu: Definition and importance
- Mudra: Role in expression
- Abhinaya: Meaning and types (only basic 4 types)
- Natya, Nritya, Nritta: Definition

Hand Gestures (Hasta Mudras)

- Importance of Hasta Mudras in dance
- Introduction to Asamyukta and Samyukta Hastas.

Rhythm (Tala) Basics

Brief introduction of South Indian Taal System .
Simple Talas used in basic compositions (Rupak and Aadi Talam)
Concept of Laya (tempo: slow, medium, fast)

- Understanding the Dance Sequence (Margam)
- Preparation for short assignments

Bhartiya Natya parampara evam abhinayadarpana by Vachaspati gairola

MDPHRE-306 - Reaserch Medothology

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः-

- विद्यार्थियों को शोध की विषयवस्तु, प्रक्रिया एवं पद्धति के बारे में अवगत कराना।
- शोध के महत्व एवं लाभ के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराना।
- दार्शनिक, सामाजिक एवं नैतिक क्षेत्र में शोध के लिए प्रेरित करना।

खण्ड-1 शोध का अर्थ, परिभाषा एवं परिचय

इकाई-1.1 अनुसंधान का स्वरूप, शोध का तात्पर्य एवं परिभाषा, शोध के प्रकार- शुद्ध शोध, व्यवहारपरक शोध

इकाई-1.2 शोध के उद्देश्य, व्यवहारपरक शोध या मनोवैज्ञानिक शोध का क्षेत्र

इकाई-1.3 वैज्ञानिक ज्ञान और वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरुप या विशेषताऐं

इकाई-1.4 साधारण ज्ञान तथा वैज्ञानिक ज्ञान में अंतर, ज्ञान-अर्जन की विधियाँ, तथ्य, परिकल्पना, सिद्धांत और नियम

खण्ड-2 शोध विधि और इसकी विशेषतायें

इकाई-2.1 वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरुप

इकाई-2.2 वैज्ञानिक विधि के आवश्यक तत्व

इकाई-2.3 एक अच्छी समस्या की विशेषताएँ या कसौटियाँ

इकाई-2.4 शोध समस्या के प्रकार

खण्ड-3 शोध - प्रक्रिया, शोध प्रक्रिया में निहित अवस्थाऐं या चरण

इकाई-3.1 शोध समस्या, परिचय, साहित्य समीक्षा, परिकल्पना

इकाई-3.2 अध्ययन-विधि, पायलट अध्ययन, परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह

इकाई-3.3 परिणाम एवं विवेचन

इकाई-3.4 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, शोध की रिपोर्ट तैयार करना

खण्ड 4 शोध-अभिकल्प, प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार,
शोध में नैतिक समस्याएँ एवं सिद्धान्त

इकाई-4.1 शोध-अभिकल्प के सिद्धान्त, शोध-अभिकल्प के सिद्धान्त

इकाई-4.2 शोध-अभिकल्प के प्रकार

इकाई-4.3 प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार

इकाई-4.4 शोध में नैतिक समस्याएँ एवं सिद्धान्त

परिणामः-

- शोध की प्रक्रिया, शोध की पद्धति एवं विषयवस्तु के बारे में आनुभविक ज्ञान प्राप्त होगा।
- शोध के विभिन्न प्रकार के लाभ एवं महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे व्यवहारिक रूप में अपनाने में सहायता प्राप्त होगी।
- विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण विषयों पर शोध करने का अवसर प्राप्त होगा जिससे वे उपयोगी एवं प्रांसगिक विषयों पर लघु शोध लिख सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- शोध प्रविधि लेखक-रंजीत कुमार, प्रकाशक-सेज पब्लिशिंग 2014, इण्डिया प्रा. लिमिटेड दिल्ली।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

CREDIT: .05

CA: 25

SEE: 75

MM: 100

MDPHMJ-401 - सांख्य–योगदर्शन IV

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योगदर्शन के चतुर्थ कैवल्य पाद का सम्भाष्य बोध कराना ।
- सांख्य के परपक्षनिर्जराध्याय तथा तन्त्राध्याय का ब्रह्ममुनि भाष्य सहित बोध कराना ।
- उपर्युक्त ग्रन्थों का सम्यक बोध कराना ।

खण्ड-1: स्वपक्ष स्थापन

इकाई-1.1 जीवात्मा से ब्रह्मात्मा की भिन्नता,

इकाई-1.2 मोक्ष का स्वरूप,

इकाई-1.3 देहमात्र का वर्गीकरण,

इकाई-1.4 सुखी कौन?

खण्ड-2 सांख्य सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय

इकाई-2.1 मोक्षाधिकारी कौन ?

इकाई-2.2 उपराग का स्वरूप एवं निरोध के उपाय,

इकाई-2.3 पुरूष बहुत्व,

इकाई-2.4 कर्मफल का भोक्ता जड़ अथवा चेतन

खण्ड-3 विभूति आदि परिचय

इकाई-3.1 विभूतियों का संक्षिप्त परिचय,

इकाई-3.2 विवेक ज्ञान का स्वरुप,

इकाई-3.3 सिद्धियों के प्रकार, कर्म के प्रकार।

खण्ड-4 कैवल्य प्रकरण

इकाई-4.1 कर्मो की फलाभिव्यक्ति,

इकाई-4.2 धर्ममेघ समाधि,

इकाई-4.3 धर्ममेघ समाधि का फल,

इकाई-4.4 प्रतिप्रसव या कैवल्य योग।

परिणाम-

- योगदर्शन के चतुर्थ कैवल्य पाद का सम्भाष्य बोध होना।
- सांख्य के परपक्षनिर्जराध्याय एवं तन्त्राध्याय का ब्रह्ममुनि भाष्य का सम्यक बोध हो पाना ।
- उपरोक्त ग्रन्थों के सन्दर्भ में भाष्यकार की दृष्टि का विकास होना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नईसड़क दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-402 - न्याय–वैशेषिकदर्शन IV

CREDIT: .05
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना, साथ ही तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद का बोध कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

खण्ड-1- प्रवृत्ति, दोष आदि पदार्थों की परीक्षा

इकाई-1.1 प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव का विश्लेषण,

इकाई-1.2 ईश्वर की निमित्त कारणाता तथा ईश्वर का स्वरुप,

इकाई-1.3 विविद वादों का निराकरण,

इकाई-1.4 फल की परीक्षा, दु:ख एवं अपवर्ग की परीक्षा।

खण्ड-2 तत्वज्ञान की उत्पत्ति आदि विचार

इकाई-2.1 तत्वज्ञान की उत्पत्ति निरुपण,

इकाई-2.2 अवयवनिरुपण,

इकाई-2.3 परमाणु का स्वरुप निरुपण,

इकाई-2.4 तत्वज्ञानहेतु का विश्लेषण एवं तत्वज्ञान परिपालन।

खण्ड-3 बुद्धि (ज्ञान) का परीक्षा

इकाई-3.1 बुद्धि (ज्ञान) नामक गुण की परिचय विश्लेषण एवं विशष्ट ज्ञान (प्रत्यक्ष ज्ञान),

इकाई-3.2 लैङ्गिक ज्ञान (आनुमानिक ज्ञान) शरीर एवं इन्द्रियों के उपादान कारण,

इकाई-3.3 अभाव आत्मज्ञान का वर्णन लैङ्गिक एवं शाब्दज्ञान।

खण्ड-4 स्मृति ज्ञान हेतु विद्या एवं अविद्या का स्वरुप आर्ष एवं सद्धिों का ज्ञान

इकाई-4.1 सुख-दु:ख नामक गुण तथा त्रिविध कारणों का विवेचन,

इकाई-4.2 सुख एवं दु:ख का परस्पर पृथक्त्व,

इकाई-4.3 समवायिकारण असमवायिकारण,

इकाई-4.4 निमित्तकारण, शास्त्र उपसंहार

परिणाम-

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम्, नवम् तथा दशमाध्याय के प्रशस्तपाद का परिचय।
- न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन के प्रमुख संदर्भों का वाचन।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, न्यायदर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), ढुण्ढिराजशास्त्री।

सहायक ग्रन्थ-

- न्यायदर्शनविद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री
- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित)
- वैशेषिक दर्शन उदयवीर शास्त्री
- वैशेषिक दर्शन आनन्द प्रकाश
- प्रशस्तपाद भाष्य ढुण्डीराजशास्त्री

MDPHMN-403 उपनिषद् बोध

CREDIT: .04

CA: 25

SEE: 75

MM: 100

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को उपनिषदों के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को उपनिषदों में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को उपनिषदों में सन्निहित ईश्वर जीव प्रकृति के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना।

खण्ड-1

इकाई-1.1 उपनिषद् शब्द का अर्थ एवं निर्वचन।
इकाई-1.2 उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय।
इकाई-1.3 उपनिषदों में ओंकार (ईश्वर/ब्रह्म/परमात्मा) का स्वरूप।
इकाई-1.4 गायत्री मंत्र का माहात्म्य।

खण्ड-2

इकाई-2.1 उपनिषदों में आत्मा, मन व इन्द्रियों का स्वरूप।
इकाई-2.2 उपनिषदों में शिक्षा व्यवस्था।
इकाई-2.3 उपनिषदों में राजनैतिक व्यवस्था।
इकाई-2.4 उपनिषदों में पंचकोश का स्वरूप।

खण्ड-3

इकाई-3.1 सिद्ध योगी का विराट् स्वरूप एवं सिद्धि के उपाय।
इकाई-3.2 उपनिषदों में प्राणविद्या।
इकाई-3.3 उपनिषदों में आनन्द की मीमांसा।
इकाई-3.4 उपनिषदों में शाश्वत् सुख (भूमा) की प्राप्ति।

खण्ड-4

इकाई-4.1 शरीर की नदी के रूप में उपमा।
इकाई-4.2 अजा तथा अज का वर्णन (प्रकृति एवं पुरुष का वर्णन)।
इकाई-4.3 श्वेताश्वरोपनिषद् में ब्रह्म का स्वरूप।
इकाई-4.4 उपनिषदों में सृष्टि रचना।

परिणाम-

- विद्यार्थी उपनिषद् में सन्निहित विषय से पूर्णरूप से अवगत हो जाता है।
- विद्यार्थी उपनिषदों के गहन अध्ययन से देश काल परिस्थिति में विचलित नहीं होता उस के जीवन में ठहराव आ जाता है।
- विद्यार्थी के जीवन में सुख-शान्ति व दिव्यता का आधान होता है।

सहायक ग्रन्थ-

उपनिषद् संदेश, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।
एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार।
ईशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर।

MDPHMJ -404- प्रस्थानत्रयी–द्वितीय

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

उद्देश्य–

- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को प्रस्थानत्रयी में सन्निहित ईश्वर जीव प्रकृति के सच्चे स्वरूप से अवगत कराना।

परिणाम–

- विद्यार्थी प्रस्थानत्रयी में सन्निहित विषय से पूर्णरूप से अवगत हो जाता है।
- विद्यार्थी प्रस्थानत्रयी के गहन अध्ययन से देश काल परिस्थिति में विचलित नहीं होता उस के जीवन में ठहराव आ जाता है।
- विद्यार्थी के जीवन में सुख–शान्ति व दिव्यता का आधान होता है।

खण्ड–1

इकाई–1.1 उपनिषदों में ध्यानयोग का स्वरूप
इकाई–1.2 उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान से अदृष्ट का क्षय
इकाई–1.3 उपनिषदों में ब्रह्मोपासक का गति निरूपण
इकाई–1.4 उपनिषदों में मुक्ति का स्वरूप

खण्ड–2

इकाई–2.1 श्रीमद्भगवद्गीता में ध्यान की विधियाँ
इकाई–2.2 श्रीमद्भगवद्गीता में गुणातीत के लक्षण
इकाई–2.3 श्रीमद्भगवद्गीता में भगवत् प्राप्ति के साधन
इकाई–2.4 श्रीमद्भगवद्गीता में त्रिविध यज्ञ, दान, तप और सुख

खण्ड–3

इकाई–3.1 वेदान्त में ध्यानादि की आवृत्ति का विवरण
इकाई–3.2 वेदान्त में ब्रह्मज्ञान से अदृष्ट का क्षय
इकाई–3.3 वेदान्त में स्थूल शरीर के नाश होने पर भी सूक्ष्म शरीर का मोक्ष पर्यन्त रहना।
इकाई–3.4 वेदान्त में ब्रह्मोपासक का परलोक गमन निरूपण

खण्ड–4

इकाई–4.1 वेदान्त में अर्चिरादि मार्ग का विचार
इकाई–4.2 वेदान्त में मुक्ति स्वरूप का विचार
इकाई–4.3 वेदान्त में मुक्ति में जीव प्रकृति के बन्धन से मुक्त
इकाई–4.4 वेदान्त में मुक्ति में ब्रह्म के साथ अवस्थिति

निर्धारित पाठ्य पुस्तक– वेदान्तदर्शनं, ब्रह्ममुनिभाष्योपेतम्, स्वामी ब्रह्ममुनिः परिव्राजकः। माता तुलसादेवी हुकमचन्द धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा)।

MDPHRE-405 - Project/Dissertation

CREDIT: .04
CA: 25
SEE: 75
MM: 100

Objectives

- To aware the students about importance of research and to develope various perception and ideas on the relative subject.
- To the students about research and its process to get qulatative research work.
- To aware the students for learning different paramteras for doing research work.

Outcomes

- Students will learn the process and method for doing research.
- Students will be able to upgrade their knowledge thourg participating the saminars, workshops and conferences.

Unit-I

- Introduction about laghu sodh lekhan
- References
- Research Journals
- Research Papers (Three research papers are compulsory in journals)
- Seminars (Three seminars presentation are compulsory)

Unit-II

- Research Methodology
- Research Objectives
- Research Ethics
- Review

Reference Book

- Research Methodology & Project/Dissertation Dr.Sadhvi Devpriya (Cheif Editor) Dr.Sanwar Singh Yadav (Editor). Publisher – Divya Prakashan 2025.
- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

संकायाध्यक्षा एवं विभागाध्यक्षा

प्रो. साध्वी देवप्रिया

दर्शन विभाग

पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार